P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-6* ISSUE-6*September-2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

अध्यापकों के लिए व्यावसायिक नीति बोध की आवश्यकता : एक अध्ययन

The Need for Teachers to Understand Business Ethics: A Study

Paper Submission: 14/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09//2021

[redacted]

प्रस्तुत शोधपत्र में शिक्षकों के लिए एक आदर्श व्यावसायिक नीतिबोध एवं प्रमुख व्यावसायिक आचार संहिता की आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। नीतिबोध में उन नैतिक सिद्धांतों को शामिल किया जाता है जिनके आधार पर मानवीय क्रियाओं और उद्देश्यों का मूल्यांकन संभव हो सके। नीतिबोध इस बात की व्याख्या करता है कि व्यक्ति और समाज के लिए क्या सही है। व्यावसायिक नीतिबोध एवं व्यावसायिक आचार संहिता दोनों का संबंध व्यावसायिक क्रियाओं में नैतिकता की स्थापना से है। इसके बावजूद दोनों में सैद्धांतिक अंतर पाया जाता है। नीतिबोध मूल आधार है जबकि आचार संहिता नीति संहिता पर आधारित एक दस्तावेज है। नीतिबोध आदर्श है जबकि आचार संहिता उसका क्रियान्वयन है। शिक्षण की एक व्यवसाय के रूप में छवि सुधारने के लिए एक नैतिक आचार संहिता का होना आवश्यक है। प्रस्तुत शोधपत्र में शिक्षकों से संबंधित व्यावसायिक नीतिबोध को 6 कारकों –शिक्षक –वृत्ति पक्ष, शिक्षक –विद्यार्थी पक्ष, शिक्षक –सहकर्मी पक्ष, शिक्षक –प्रबंधन पक्ष, शिक्षक –अभिभावक पक्ष एवं शिक्षक –समाज पक्ष के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

In the present paper, the need and importance of an ideal Professional ethics and major Professional code of conduct has been highlighted for teachers. Ethics includes those ethical principles on the basis of which it is possible to evaluate human actions and motives. Ethics explains what is right for the individual and society. Both Professional ethics professional code of conduct are concerned with the establishment of ethics in professional practices. Despite this, there is a theoretical difference between the two. Ethics is the basic foundation whereas code of conduct is a document based on code of ethics. Ethics is the ideal while the code of conduct is its implementation. An ethical code of conduct is essential for improving the image of teaching as a profession. In the present paper, the professional policy related to teachers has been presented through 6 factors – teacher-professional aspect, teacher-student aspect, teacher-peer aspect, teacher-management aspect, teacher-parent aspect and teacher-society aspect.

प्रवीन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बी. एड. विभाग,
फिरोज गांधी कॉलेज,
रायबरेली, उत्तरप्रदेश,
भारत

नीलम
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बी.एड विभाग,
के. एस. साकेत पीजी कॉलेज, अयोध्या,
उत्तरप्रदेश, भारत

मुख्य शब्द: अध्यापक, व्यावसायिक नीतिबोध, व्यावसायिक आचार्य संहिता

Keywords: Teacher, Professional Ethics, Professional code of conduct

प्रस्तावना

शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक, शिक्षा और समाज को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। अन्य व्यवसायों में जहाँ लोग वस्तुऐं एवं पदार्थ बनाते हैं, वहीं शिक्षक एक अविकसित और अनगढ़ चेतना को अभीष्ट दिशा में मोड़कर उसे विकसित, सुदृढ़ एवं सुघड़ इंसान के रूप में विकसित करता है, इसलिए शिक्षक का कार्य संसार के सर्वाधिक जटिल कार्यों में से एक है। शिक्षक का अर्थ किसी जाति, धर्म या वर्ग विशेष से न होकर सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणकारी व्यक्ति के रूप में लिया जाता है। प्राचीनकाल में इसी पवित्र सोच के कारण शिक्षण को व्यवसाय न मानकर एक आध्यात्मिक कार्य माना जाता था। लेकिन जैसे-जैसे युग परिवर्तन होना शुरू हुआ और सामाजिक परिवेश बदला, लोगों की आदतों, मनोवृत्तियों में परिवर्तन होना शुरू हुआ। शिक्षा प्रदान करके मात्र अध्यापन द्वारा संतुष्ट होने वाला शिक्षक अब शिक्षण को आध्यात्मिक कार्य या सेवा कार्य न समझकर जीविकोपार्जन के साधन के रूप में स्वीकार कर चुका है। बदले हुए परिवेश में समाज और राष्ट्र के द्वारा शिक्षक से अधिक व्यावसायिक कुशलता की अपेक्षा की जा रही है। शिक्षक का कार्य कक्षा-कक्ष तक ही सीमित नही है। शिक्षक की जवाबदेही समाज एवं राष्ट्र के प्रति भी है। शिक्षक को बदलते हुए समय के साथ अपनी विधियों एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन करना होगा । व्यवस्था की सफलता या असफलता शिक्षकों पर ही निर्भर करती है। परन्तु यदि शिक्षकों में अपनी कार्य-निर्वहन क्षमता का अभाव है और वे अपने व्यावसायिक कर्तव्यों को पूरा नहीं करते हैं, तो

व्यवस्था का असफल होना निश्चित है। शिक्षक अपने कर्तव्यों का कुशलापूर्वक निर्वहन कर सके इसके लिए वर्तमान मेंआदर्श नीति संहिता पर आधारित एक स्पष्ट आचार संहिता की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है।स्पष्ट आचार संहिता की उपस्थिति में नीतिगत और अनीतिगत व्यवहार की पहचान सरलता से की जा सकती है। इस आचार संहिता में वैयक्तिक चरित्र, जवाबदेही, अन्तर्दर्शन, आत्मसंतुष्टि, प्रेरणा जैसे नैतिक मूल्यों को शामिल करके शिक्षकों की व्यावसायिक कार्यकुशलता में वांछनीय और सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। इससे शिक्षकों, शिक्षक– प्रशिक्षको और विद्यार्थियों को व्यावसायिक नीतिबोध के व्यावहारिक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता मिलेगी।

साहित्यावलोकन

कुमार, प्रवीण (2019) ने अपने अध्ययन "ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटवीन प्रोफेशनल इथिक्स एंड ऑक्युपेशनल स्ट्रेस एट द डिफरेंट लेवल्स ऑफ सेकेंडरी टीचर्स इमोश्नल इंटेलिजेंस" में सहारनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 400 शिक्षकों के न्यादर्श पर अध्ययन किया।न्यादर्शका चयन बहुस्तरीय दैव निदर्श प्रविधि के द्वाराकिया गया।अध्ययन का उद्देश्य सांवेगिक बुद्धिएवं वृत्तिक दबाव के साथ व्यावसायिक नीतिबोध के अंतर्संबंधों की गतिकी का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि वृत्तिक दबाव का उच्च एवं निम्न स्तर व्यावसायिक नीतिबोध को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, जबकि मध्यम वृत्तिक दबाव वाले शिक्षकों में व्यावसायिक नीतिबोध का स्तर उच्च पाया गया। सांवेगिक बुद्धि एवं व्यावसायिक नीतिबोध में सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अध्ययन के सुझावों में बताया गया कि शिक्षकों की सांवेगिक बुद्धि एवं कार्य दशाओं में सुधार करके उनके व्यावसायिक नीतिबोध के स्तर को ऊपर उठाया जा सकता है। शिक्षकों के लिए एक स्पष्ट आचार संहिता का निर्माण करके उनकी नैतिक संस्कृति को सुधारा जाना चाहिए।

जिलानी, बरजीस (2015) ने "प्रोफेशनल एथिक्स एंड इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ हॉयर सेकेंडरी टीचर्स टू दियर टीचर इफेक्टिवनेस" पर अध्ययन किया । यह अध्ययन जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले के 400 माध्यमिक शिक्षकों के न्यादर्श पर कियागया। अध्ययन का उद्देश्य व्यावसायिक नीतिबोध एवं संवेगात्मक बुद्धि का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव देखना था। अध्ययन के परिणामों में परिलक्षित हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि और व्यावसायिक नीतिबोध दोनों अलग – अलग शिक्षण प्रभावशीलता के साथ सकारात्मक सहसंबंधरखते हैं। अध्ययन में सुझाया गया कि शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शिक्षकों में संवेगात्मक बुद्धि के स्तर को ऊपर उठाने वाला होना चाहिए। साथ ही अध्यापकों में व्यावसायिक नीतिबोध के विकास हेतु स्पष्ट व्यावसायिक कथन तैयार किए जाए जिससे एक कार्य प्रणाली और अध्यापकों में व्यावसायिकता का विकास हो सके।

सेघेदीन, एलीना (2014) ने अपने अध्ययन, ''टीचर्स प्रोफेशनल इथिकस टू द पर्सनल प्रोफेशनल रेसपोंसिबिलिटी'' में नई पीढ़ी के सभी वयस्कों के लिए नागरिक जवाबदेही की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित किया। इस लेख का मुख्य उद्देश्य शिक्षण व्यवसायिकता के स्थिर आयामों के अधीन शिक्षण नीतिबोध को तय करना था। व्यक्तिगत नैतिक व्यावसायिक के तत्वों के रूप में उद्यम, कार्य संलग्रता, स्वायत्तता एवं जवाबदेही व्यक्तिगत नैतिक व्यावसायिकता के प्रमुख तत्वों के रूप में स्वीकार किया गया। शिक्षक के व्यावसायिक व्यक्तित्व के अस्तित्व के परिप्रेक्ष्य में सम्बन्धित एवं विमर्श के विषय रहे हैं। अध्ययन सुझावों में बताया गया कि अधिगम और व्यावसायिक संस्थानों जैसे विद्यालयों और विश्वविद्यालयों शिक्षक लोकाचार को प्रोत्साहित करना चाहिए और शिक्षण प्रयोगिक नीतिबोध व क्रियाशील व्यक्तिगत नैतिक व्यावसायिकता के विकास में योगदान देना चाहिए।

कैम्पबेल, एलिजाबेथ (2013) ने अपने निबन्ध ''द वच्र्यूज, वाइज एण्ड नालिजेबल टीचरः लिविंग द गुड लाइफ एज ए प्रेक्टिशनर'' में हयूज साकेट द्वारा लिखित ''नालिज एण्ड वच्र्यू इन टीचिंग एण्ड लर्निंगः द प्राइमेसी आफ डिसपोजीशन'', क्रिस हिगिन्स द्वारा लिखित ''द गुड लाइफ आफ टीचिंगः इथिक्स आफ प्रोफेशनल प्रेक्टिस'' और लिज बुंडी, डेविड कैर, क्रिस क्लार्क एवं केसिला क्लेग द्वारा सम्पादित ''टूवार्डस प्रोफेशनल विजडमः पैक्टिकल डेलिबेरेशन इन द पीपल प्रोफेशन्स'' नामक तीन नवीनतम पुस्तकों का पुनरावलोकन किया। पुस्तकों में अन्र्तविषयी उपागम का प्रयोग करते हुए नर्सिंग, समाज कार्य परामर्श एवं मंत्रालय के साथ-साथ शिक्षण व्यवसायों क कार्यों से सम्बन्धित अध्यायों को शामिल किया गया था। प्रत्येक पुस्तक में व्यापक रूप से दर्शनशास्त्र एवं शिक्षा दर्शन विशेषतया अरस्तु के वच्र्यू नीतिबोध के प्रत्ययात्मक ढांचें के पुनरीक्षण को शामिल किया गया था। शोधकर्ता ने पाया कि शिक्षक शिक्षा सामयिक सन्दर्भों में व्यावसायिक नीतिबोध को या तो उपेक्षित किया गया है या बहुत कम स्थान दिया गया है। ऐसे में स्पष्ट नीतिगत ढांचे में वैयक्तिक चरित्र, और उत्तरदायित्व के संवर्धन पर बल देना, शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। इससे शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों और विद्यार्थियों को व्यावसायिक नीतिबोध के व्यावहारिक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता मिलेगी।

अध्ययन के उद्देश्य

1. व्यावसायिक नीतिबोध के संप्रत्यय को स्पष्ट करना।
2. व्यावसायिक नीतिबोध और व्यावसायिक आचार संहिता में अंतर करना।
3. व्यावसायिक नीतिबोध की संक्रियात्मक परिभाषा प्रस्तुत करना।
4. शिक्षकों हेतु महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक नीतिबोध संहिता का निर्माण एवं विकास करना।

व्यावसायिक नीतिसंहिता और व्यावसायिक आचार संहिता में अंतर

नीति संहिता और आचार संहिता को व्यावहारिक दृष्टि से तो पूर्णतः पृथक नहीं किया जा सकता क्योंकि दोनों का संबंध व्यावसायिक जीवन में नैतिकता की स्थापना से है, किन्तु इन दोनों में सैद्धांतिक तौर पर अंतर है- नीति संहिता मूल आधार है, इसमें कुछ नैतिक मूल्यों को शामिल किया जाता है, जबकि आचार संहिता नीति संहिता पर आधारित एक दस्तावेज है जो यह निश्चित करता है कि किसी व्यक्ति को अपने व्यावसायिक जीवन में कौन सा आचार करना चाहिए, कौन सा नहीं। नीति संहिता प्रायः सामान्य तथा अमूर्त होती है, जबकि आचार संहिता विशिष्ट एवं मूर्त होती है। संभवतः विभिन्न व्यवसायों के लिए नीति संहिता एक जैसी हो सकती है। आचार संहिता समय के अनुसार परिवर्तित होती है, जबकि नीति संहिता अपेक्षाकृत स्थाई होती है । जैसे 'ईमानदारी' नैतिक संहिता का एक पक्ष है जो सदैव यथावत है परन्तु आचार संहिता में परिवर्तन आवश्यक है क्योंकि समय के साथ आचरण के भिन्न रूप (भ्रटाचार, अपराध आदि)सामने आते रहते हैं।इसके अतिरिक्त नीति संहिता का कैनवास बड़ा हो सकता है।

यह मानव जीवन के सभी पहलुओं को शामिल करता है। यह पूरे समाज की शिक्षा, संस्कृति व धर्म पर लागू होती है जबकि आचार संहिता में सामान्यतः व्यक्ति का व्यावसायिक आचरण आता है।

व्यावसायिक नीतिबोध की संक्रियात्मक परिभाषा

व्यावसायिक नीतिबोध उन वांछनीय नैतिक मानदंडों का समूह है जिसकी किसी भी व्यक्ति से अपने व्यावसायिक जीवन में पालन करने की अपेक्षा की जाती है । अध्यापकों के लिए व्यावसायिक नीतिबोध से तात्पर्य उन नैतिक मूल्यों, आदर्शों, नियमों एवं मानदंडों से है जिनकी उससे अपने विद्यार्थियों, अभिभावकों, सहकर्मियों समुदाय एवं उच्च अधिकारियों से व्यवहार करते समय पालन करने की अपेक्षा की जाती है। ये नैतिक मानदंड वांछनीय एवं अवांछनीय व्यवहार में विभेद करने हेतु आधार प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में व्यावसायिक नीतिबोध के 6 कारकोंका अध्ययन किया गया है –शिक्षक -वृत्ति पक्ष, शिक्षक -विद्यार्थी पक्ष, शिक्षक - सहकर्मी पक्ष, शिक्षक - प्रबंधन पक्ष, शिक्षक - अभिभावक पक्ष एवं शिक्षक - समाजपक्ष

अध्यापकों हेतु महत्वपूर्ण आचारसंहिता
वृत्ति के प्रति कर्तव्य

शिक्षण व्यवसाय को सभी व्यवसायों में श्रेष्ठ माना जाता है। अपने व्यावसाय के प्रति शिक्षकों के कुछ प्रमुख कर्तव्य इस प्रकार हैः-

अपनी वृत्ति के व्यावसायिक स्तर को ऊपर उठाना

शिक्षक को शिक्षणशाला की व्यवसायिक आचार संहिता का स्वेच्छा से और अनिवार्यतः पालन करना चाहिए। शिक्षक को सदैव व्यावसायिक व्यवहार और दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहिए।

वृत्ति का आदर करना

शिक्षक को अपने व्यवसाय और संस्थान का सदैव आदर करना चाहिए।

वृत्ति विकास में सहायता करना

शिक्षकों को अपने अनुभव तथा ज्ञान को एक दूसरे के साथ बाँटते रहना चाहिए। शिक्षकों को समय पर शोधकार्य करते रहना चाहिए और उनकी प्राप्तियों को सम्बन्धित पत्रिका और जर्नल में प्रकाशित कराना चाहिए।

कार्य संस्कृति में सुधार करना

शिक्षण व्यवसाय के विकास हेतु एक स्वस्थ कार्य संस्कृति का होना अत्यन्त आवश्यक है। विद्यालय में शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने सहकर्मियों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करें। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे सभी व्यावसायिक सम्मेलनों और अधिवेशनों में भाग लेते हुए नीति-निर्माण में सहयोग प्रदान करें

गोपनीयता बनाये रखना

अनुशासन शिक्षण व्यवसाय का एक अनिवार्य पक्ष है। शिक्षकों को नीतिगत मामलों, छात्र-अभिलेख, परीक्षा परिणाम, प्रश्न-पत्रों का व्यवस्थापन और उत्तर-पुस्तिकाओं के मूल्यांकन जैसी गोपनीय सूचनाओं को न तो किसी अनधिकृत व्यक्ति को बताना चाहिए न ही समय से पहले प्रकट करना चाहिए। शिक्षक को कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो उसके व्यवसाय के लिए अप्रतिष्ठाजनक हो।

विद्यार्थियों के प्रति कर्तव्य

शिक्षक और विद्यार्थी शिक्षा प्रक्रिया के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग होते हैं। शिक्षकों के अपने विद्यार्थियों के प्रति कुछ कर्तव्य इस प्रकार है-

प्रभावी शिक्षण

यह शिक्षकों का कर्तव्य है कि वें अपनी क्षमताओं और उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम प्रयोग करते हुए शिक्षण कार्य करें। विद्यार्थियों को किसी भी विषय को पढ़ाने से पहले उन्हें मानसिक रूप से तैयार करना जरूरी होता है। शिक्षकों को परंपरागत तकनीक से हटकर, बच्चों की मानसिकता को ध्यान में रखकर अपनी शिक्षण शैली में बदलाव लाना चाहिए। विद्यार्थियों को व्यवहारिक जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करना शिक्षकों का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

संवेगात्मक विकास

बालक स्वभाव से ही भावनात्मक होते हैं। शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वें बालकों की संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति और तनाव और दबाव का सामना करने में सहायता प्रदान करें। शिक्षकों को बालकों के संवेगों का परिमार्जन, सही दिशा तथा गति प्रदान करनी चाहिए।

अनुशासन

अनुशासन एक नियम के प्रति किसी की भावनाओं और शक्ति के आत्मसमर्पण में निहित होता है। यह अव्यवस्था पर आरोपित किया जाता है, तथा अकौशल एवं निरर्थकता के स्थान पर कौशल एवं मितव्ययिता उत्पन्न करता है। हो सकता है हमारा स्वभाव इस नियंत्रण को प्रतिनियंत्रित करे किन्तु इसकी मान्यता अन्ततः ऐच्छिक स्वीकृति पर होती है। बढ़ती उम्र के साथ बालकों में कुछ ऐसी आदतें और प्रवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं, जिन्हें विद्यालय एवं समाज के द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है। शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वे छात्रों के व्यवहार को परिमार्जित कर सही और वांछनीय मार्ग की ओर प्रशस्त करें।

निर्णयन क्षमता का विकास

व्यक्तित्व निर्माण के साथ निर्णयन क्षमता का विकास शिक्षा का मूल लक्ष्य है। निर्णयन क्षमता की योग्यता ही किसी की सफलता अथवा असफलता की निर्धारक होती है। शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वे बालकों को निर्णयन के पर्याप्त अवसर प्रदान कर उनकी निर्णयन क्षमता के विकास में सहयोग प्रदान करें।

नेतृत्व के लिए प्रशिक्षण

किसी देश की वर्तमान व्यवस्था में उचित तथा दक्ष नेतृत्व एक अनिवार्य आवश्यकता है। एक देश तभी उन्नति कर सकता है, जब उसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, कलात्मक, सांस्कृतिक, औद्योगिक तथा नैतिक क्षेत्रों में योग्य नेता हों। अतः शिक्षकों का यह उत्तरदायित्व है कि वह बालकों में अन्तर्निहित विभिन्न नेतृत्व क्षमताओं की पहचान करें एवं उनके विकास हेतु सभी संभव कदम उठाये।

अभिभावकों के प्रति कर्तव्य

शिक्षकों के बालकों के साथ-साथ उनके अभिभावकों के प्रति भी कर्तव्यों का निर्वहन करना होता है। उनसे उन्हें समय≤ पर बच्चों की प्रगति से सम्बन्धित सूचनाएँ उपलब्ध कराने तथा बच्चों के भविष्य के सन्दर्भ में निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है। ऐसे ही कुछ कर्तव्य इस प्रकार हैं

सूचनाएं उपलब्ध कराना

शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वें अभिभावकों को न केवल बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बल्कि उनके सम्पूर्ण व्यवहार से सम्बन्धित सूचनाएँ निरन्तर एवं नियमित समय पर उपलब्ध कराते रहें। यह एक अभिभावक का अधिकार है कि वह अपने बच्चों की प्रगति से नियमित रूप में अवगत रहे।

अभिभावकों को निर्णयन में सहायता

अभिभावकों को बालक की क्षमताओं का सीमित ज्ञान होता है। चूंकि शिक्षक बालक की संभावनाओं से भली-भाँति परिचित होते हैं, अतः वे बालक की रूचि, योग्यता व क्षमता को ध्यान में रखते हुए उनके लिए उपयुक्त शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकल्पों के चयन सम्बन्धी निर्णय लेने में अभिभावकों की मदद कर सकते हैं।

बालक की अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता से सम्बन्धित सूचनाएँ साझा करना

एक शिक्षक अपने छात्र-छात्राओं की क्षमताओं को बेहतर जानता है शिक्षक जानता है कि बालक कितना योग्य है, क्योंकि वह उसका अकेले और समूह में दोनो प्रकार से अवलोकन करता हैं बालक की अभिवृत्ति और अभिक्षमता को शिक्षक ही अच्छी भाँति समझ सकता है। अतः शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे बालकों की अभिवृत्ति व अभिक्षमताओं से सम्बन्धित सूचनाएँ समय पर अभिभावकों से साझा करते रहें।

घर के वातावरण में सुधार हेतु सहायता

जब बालक घर पर उत्पन्न होने वाली किसी समस्या का सामना करता है और इससे उसके विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, ऐसी स्थिति में शिक्षक अभिभावकों को सुझाव दे सकते हैं कि वे किस प्रकार बालक के विकास के अनुकूल घर का वातावरण तैयार करें।

विद्यालय और अभिभावकों के मध्य सम्बन्ध

यह शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यालय की कार्य पद्धति, नई योजनाओं, क्रियाओं, पाठ्यक्रम में परिवर्तन आदि से संबंधित सूचनाएँ नियमित रूप से अभिभावकों को उपलब्ध करायें। इसके अतिरिक्त अभिभावकों को विद्यालय में सुधार हेतु सुझाव देने के लिए प्रोत्साहित करने में भी शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

समाज के प्रति कर्तव्य

शिक्षा और समाज एक-दूसरे के पूरक और परस्पर सम्बन्धित हैं। शिक्षक भावी समाज के स्वरूप-निर्धारण एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाते हैं समाज के प्रति शिक्षकों के कर्तव्य इस प्रकार है

विद्यार्थियों को सामाजिक मानकों के प्रति जागरूक करना

प्रत्येक समाज के अपने कुछ मानक एवं नियम होते हैं। समाज के प्रत्येक सदस्य से इन मानकों और नियमों का अनुसरण करने की अपेक्षा की जाती है। सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिए शिक्षकों का यह उत्तरदायित्व है कि वे इन नियमों एवं मानकों के बारे में छात्रों को निर्देशित एवं प्रशिक्षित करें।

विद्यार्थियों को उनके अधिकर एवं कर्तव्यों के बोध में सहायता

एक विद्यार्थी को अपने अधिकार एवं कर्तव्यों के बारे में मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। शिक्षक का दायित्व है कि वह बालकों को नैतिक नियमों की जानकारी प्रदान करे ताकि वे कर्तव्यनिष्ठ बनकर स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान दे सकें।

नीतिगत मूल्यों को समझाना

किसी भी प्रगतिशील समाज के लिए आवश्यक है कि उसके सदस्यों हेतु एक निश्चित नीतिगत आचार संहिता हो। बालक किसी भी राष्ट्र का भविष्य होते हैं। शिक्षक का कर्तव्य है कि वह बालकों को नैतिक एवं नीतिगत मूल्यों की शिक्षा प्रदान करें जिससे वे समाज के जिम्मेदार नागरिकों के रूप में समाज के विकास में योगदान दे सके।

सहिष्णुता की शिक्षा

भारत जैसे विविधतापूर्वक देश में धार्मिक सहिष्णुता की अत्यन्त आवश्यकता है। यहाँ अनेक धर्मों और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। शिक्षकों का दायित्व है कि वे विद्यार्थियों को सहिष्णुता एवं सामाजिक जीवन के महत्व एवं उपयोगिता को समझायें।

राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित करना

राष्ट्रीय एकता ऐसी मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोगों के हृदयों में एकता, घनिष्ठता, सन्निकटता, सामान्य नागरिकता एवं राष्ट्र के प्रति भक्ति की भावना विकसित की जाती है। शिक्षकों को इस विषय में बालकों में जागरूकता पैदा करनी चाहिए कि किस प्रकार राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत किया जाये।

उच्च प्राधिकारी वर्ग के प्रति कर्तव्य

यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक बदलती हुई आवश्यकताओं, प्रभावी कार्य पद्धति और अपने संस्थान के विकास हेतु उच्च प्राधिकारी वर्ग के साथ अपने कार्यों का समन्वय बनाकर रखें। उच्च प्राधिकारी वर्ग के प्रति शिक्षकों के प्रमुख कर्तव्य इस प्रकार हैं

नियमों और अधिनियमों का पालन करना

संस्थान में अनुशासन एवं एकरूपता बनाये रखने के लिए उच्च प्राधिकारी वर्ग द्वारा समय पर बनाये गये नियमों का शिक्षकों द्वारा स्वेच्छा से अनिवार्य रूप से पालन किया जाना चाहिए।

उच्च प्राधिकारी वर्ग एवं विद्यार्थियों के मध्य एक कड़ी के रूप में कार्य करना

उच्च अधिकारी वर्ग द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं संस्थान हित में समय पर शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक नीतियों का निर्माण किया जाता है। शिक्षकों को बेहतर परिणाम हेतु इन नीतियों को स्वयं समझते हुए बढ़ावा देना चाहिए।

रणनीतिक सूचनाएँ प्रदान करना

शिक्षक छात्रों एवं उच्च प्राधिकारी वर्ग के मध्य सुझावों को प्रदान करने और सही चित्र प्रस्तुत करने में माध्यम के प्रत्यक्ष स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। अतः वे प्रभावी ढंग से नीतियाँ का नियोजन कर सकते हैं।

कार्यक्रमों एवं नीतियों का प्रभावपूर्ण ढंग से क्रियान्वयन करना

कार्यक्रमों और नीतियों की सफलता सभी पक्षों के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है। शिक्षकों को नीति-निर्माताओं, प्रबन्धन के साथ शिक्षण नीतियों और कार्यक्रमों के प्रभावपूर्ण क्रियान्वयन में अपना योगदान देना चाहिए।

निष्कर्ष

यह सार्वभौमिक रूप से महसूस किया जा रहा है कि शिक्षण व्यावसाय के स्तरए उसकी गरिमा एवं शुचिता को बढ़ाया जाये । इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षण समुदाय के द्वारा स्वयं के निर्देशन के लिए एक स्पष्ट आचार संहिता का निर्माण किया जाये। यह आचार संहिता एक सार्वभौमिक एवं आदर्श नैतिक संहिता पर आधारित होगी । एक शिक्षक के कार्यों में व्यावसायिक गतिविधियों से संबंधित कुल 6 प्रमुख क्षेत्रों को शामिल किया जाता हैए जिनमें प्रत्येक क्षेत्र के कुछ निर्धारित सिद्धांत हैए जो कि शैक्षिक संहिता के लिए दिशा निर्देश का कार्य करते हैं । शिक्षकों के व्यावसायिक संगठन की यह जिम्मेदारी है शिक्षकों द्वारा आचार संहिता के समस्त खंडों के पालन को सुनिश्चित करें। इसके लिए उपयुक्त तंत्र विकसित करने की जिममेदारी संबंधित संस्था की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कुमार, प्रवीण (2019),ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटवीन प्रोफेशनल इथिक्स एंड ऑक्युपेशनल स्ट्रेस एट द डिफरेंट लेवल्स ऑफ सेकेंडरी टीचर्स इमोश्नल इंटेलिजेंस, (29, 35-41, 58, 78) ।*
2. *जिलानी, बरजीस (2015), प्रोफेशनल एथिक्स एंड इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ हॉयर सेकेंडरी टीचर्स टू दियर टीचर इफेक्टिवनेस,(242,243,268) ।*
3. *सेघेदीन, एलिना (2014), फ्रॉम द टीचर्स प्रोफेशनल इथिक्स टू द पर्सनल प्रोफेशनल रिस्पांसिबिलिटी, (13-22) ।*
4. *केंपबेल, एलिज़ाबेथ (2013), द वर्च्यूज, वाइज एंड नालिजेबल टीचर : लिविंग द गुड लाइफ एज ए प्रेक्टिशनर (3-7) ।*
5. *फिशर, येल (2013), एक्सप्लोरेशन ऑफ वैल्यूज : इस्राइली टीचर्स प्रोफेशनल इथिक्स. एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी ऑफ एजुकेशन, 16 (2), (297-315)।*
6. *हेंडरसन, रिचर्ड एल(2012), इथिक्स एंड वैल्यूज इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ टीचिंग एक्सीलेंस इन द चेंजिंग वर्ल्ड ऑफ एजुकेशन, जर्नल ऑफ कॉलेज टीचिंग &लर्निंग, 7 (3), (5-12) ।*
7. *मोंटगोमरी, डायने & वॉकर, मैरी (2012),एन्हेन्सिंग इथिकल एवेयरनेस, जर्नल ऑफ गिफ्टेड चाइल्ड टुडे, 35 (2), (95-101) ।*
8. *प्रधान, नित्यानंद (2006), द इथिकल रिस्पांसिबिलिटीज द टीचिंग इंप्लिकेशनस फॉर टीचर एजुकेशन, जर्नल ऑफ एज्युट्रेक्स, 5 (8), (12-15) ।*